IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# भारतीय कला जगत में कला दीर्घाओं का प्रदुर्भाव : एक विश्लेषण

Richa Singh
Rsearch Scholar, Drawing & Painting Department
Chatrapati Shahuji Maharaj University Kanpur,Uttar Pradesh

केंद्रीय ललित कला अकादमी का गठन, विभिन्न राज्यों में कला अकादमी एवं कला संस्थानों की स्थापना, साहित्यिक और सांस्कृतिक पत्र–पत्रिकाओं द्वारा कला स्तंभों की शुरुआत केंद्र व राज्य स्तर पर कलाकारों को पुरस्कार का वितरण आदि कुछ ऐसे कारण रहे कि स्वतंत्र भारत की कला के प्रति दिलचस्पी बढी और भारतीय कला जगत में पर्याप्त सक्रियता आयी। आज हमारे देश के प्रमुख महानगरों व शहरों के निजी तथा राज्य स्तर पर अनेक कला दीर्घाओं की स्थापना हो चुकी है जहाँ प्रति सप्ताह नयी– नयी कलाकृतियों का हुजूम सा लगा रहता है अनेक कलाकृतियों का विक्रय भी होता है। विदेशों तक कलाकारों की धाक जमी है। भारत का कला जगत आज पूर्णतः क्रियाशील है। यह एक विचित्र तथ्य है कि यहाँ गत 45 वर्षों में **'बंगाल स्कूल'** की भांति किसी एक खास शैली की स्थापना नहीं हो पाई है। इसका भी एक मूल कारण है कि प्रत्येक आधुनिक कलाकार कुछ अलग दृष्टिकोण रखता है और अलग शैली का प्रयोग कर रहा है। इसी कारण इनकी एक श्रेणी बनाना भी कठिन होता जा रहा है। प्रत्येक कलाकार एक दूसरे से भिन्न व्यक्तित्व तथा विचारधारा रखता है। इस विभिन्नता के बाद भी सबमें एक कलात्मक आकर्षण है।

दरबारी कला के युग में कलाकार एक राज्य आश्रय मिलने के पश्चात जीवन पर्यन्त उसी राज्य के जीवन के चित्रण में ही तल्लीन हो जाते थे इसी कारण एक शैली विशेष का जन्म होता था क्योंकि कलाकार व्यक्तिगत रूप से कार्य न करके एक शैली परख सेवक के रूप में राजा को अपनी सेवा प्रदान करता था। 1880 ई. के पश्चात् आधुनिक समकालीन कला के विकास से शैलीपरक कार्य न करके कलाकार व्यक्तिपरक कार्य करने लगा जो आज भी निरंतर प्रगतिशील है। इस समयावधि में अनेक उतार– चढ़ाव के साथ कलाकृति व कलाकार के कार्य करने के तरीके में सदैव परिवर्तन होता गया। यह परिवर्तन अचानक नहीं अपितु निरंतर धीमी गति से होता गया। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक भी कलाकार के पास अपनी कला को प्रदर्शित करने का कोई विशेष साधन न था। उस समय कला प्रेमी सीधे कलाकार की कलाकृति क्रय कर लेते थे। कुछ समय पश्चात् कलाकार वार्षिक अकादमी प्रदर्शन द्वारा चित्रों का क्रय विक्रय होने लगा। कलाकृतियों का यह व्यवसाय यदाकदा ही हो पाता था। कला दीर्घाओं का सर्वप्रथम प्रयोग महानगरों में हुआ। अचानक असाधारण रूप से हुए एक परिवर्तन को कला वर्ग के सभी मान्यजनों ने स्वीकारा व प्रोत्साहन प्रदान किया। कला आधुनिक महानगरों में जन्मी व विकसित होने लगी तथा यह प्रयास कला जगत में एक नवनिर्माण की लहर लेकर आया।

कला दीर्घा समाज के सम्मुख कला अभिव्यक्ति प्रस्तुत करने का एक प्रमुख माध्यम है।वह स्थान जहॉ चित्रो' का एक बाजार सस्ता है। चित्र सामान्य जनमानस व समाज से सीधा संबंध स्थापित करने का जरिया है। सोचिए यदि कलाकार कृति बनाकर आत्मसंतुष्टि तो प्राप्त कर लें परन्तु उसे प्रदर्शित न करें तो उस चित्र का उद्देश्य पूर्ण नहीं होगा। वह कृति घर के स्टोररूम में ही धूल छानती रह जाएगी। कला का उद्देश्य स्वतः सुखाये के साथ कला सौंदर्य व भावों का संप्रेषण द्वारा दर्शक के मन तक स्थानांतरण करना है। युवा कलाकारों को कला दीर्घाओं की जानकारी होनी चाहिए तथा इन कला दीर्घाओं का पक्षधर होना चाहिए जो कि कला व कलाकारों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सामाजिक कार्य में अपना योगदान दे रही है।

भारत में कला दीर्घाओं का इतिहास अधिक पुराना नहीं है। भारत में ब्रिटिश शासकों (ईस्ट इंडिया कंपनी) ने अपने शासन के समय भारतीयों (कवि, साहित्यकार, नाटककार, कलाकार) को अपना गुलाम बनाया और अपने अनुरूप सेवाएं ली उन्होंने शैलीगत बन रहे चित्रों की सराहना की परंतु उन चित्रों को अपने परिजनों को भेंट स्वरूप विदेश भेज दिया।साथ ही कलाकार दासों को अपनी कला तकनीक का पूर्ण ज्ञान दिया तथा उनसे सेवाएं ली जिससे भारतीय वाश तकनीक, जल रंग चित्रों के साथ विदेशी चित्र तकनीकों का भारतीय कलाकारों को ज्ञान हुआ। जिसकी जिज्ञासा सदैव से उनके मन में थी।

18वीं शताब्दी में भारतीय चित्रकला की संपूर्ण काया परिवर्तित होना प्रारंभ हो गई। जब बड़ी संख्या में ब्रिटिश चित्रकारों का भारत में आगमन हुआ। व्यापार के साथ अपना राजनीतिक प्रभुत्व भी बढ़ाती जा रही थी। कंपनी की आज्ञा लेकर स्वतंत्र रूप से इंग्लैंड से आए चित्रकार भारत में अपने लिए एक समृद्ध बाजार की कल्पना कर रहे थे। कुछ तो भारत के मुगल अथवा हिंदू राजपूत शासकों के दरबार में पहुंचे जहाँ उनके चित्र अधिक मात्रा में बिके। इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध स्मारकों तीर्थों, पर्यटक स्थलों में घूम–घूमकर व्यक्तिगत रूप से चित्र बनाने लगे। कंपनी अधिकारियों ने इन चित्रकारों द्वारा भारतीय तकनीकी में चित्रों को भी बनवाया।जिनका विषय लोकजीवन तथा व्यक्ति चित्र था।इन समस्त चित्रकारों का युग **1760–1900 ई.** तक का रहा। इसमें कुशल चित्रकार, शौकिया चित्रकार, नारी चित्रकार, व्यावसायिक चित्रकार सम्मिलित थे जिन्होंने खूब धन बटोरा। उन कलाकारों का चित्र व्यवसाय दरबार में जाकर एक व्यापारी के रूप में चित्र बेचना था। इन कलाकारों को असीम सफलता प्राप्त हुई।

**1780 ई.** भारत के वायसराय **वारेन हेस्टिंगज** ने इन ब्रिटिश चित्रकारों को संरक्षण प्रदान किया। महिला चित्रकारों में **मिस एमिली ईडन** लाहौर के **महाराजा रणजीत सिंह** के दरबार में पहुंची तथा सर्वप्रथम रणजीत सिंह का शबीह चित्र बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। धीरे–धीरे उन कलाकारों ने जन–जीवन, शहरी दृश्य, धार्मिक उत्सव, नदियाँ, झरने, पहाड़, प्राचीन स्मारकों को चित्रित किया। अलग–अलग स्थानों पर स्केच बनाए।इन सभी परिस्थितियों का प्रभाव भारतीय कलाकारों पर पड़ा। इन विदेशी चित्रकारों के आश्रय में भारतीय चित्रकार एंग्लो इण्डियन ढंग से कार्य करने लगे। इसी के पश्चात बंगाल में 18वीं शताब्दी में तेल चित्रण हुआ जिसे डच बंगाली शैली कहा गया। तेल माध्यम बंगाल के कलाकारों द्वारा डच चित्रकारों से मंगवाया जाता था।

इस समय भारतीय निराश्रित कलाकार जो कार्य कर रहे थे, उसे काली नदी के घाट पर प्रदर्शित करते थे। जिसमें चित्रों के विषय देवी–देवता, पौराणिक घटनाएँ, थी इसके अतिरिक्त प्राकृतिक दृश्य आदि थे। कला जगत में **राजा रवि वर्मा** जैसे महान कलाकार का प्रादुर्भाव हुआ जो एक राजसी परिवार से संबंधित थे तथा उन्हें ब्रिटिश कला तकनीक का अत्यधिक लाभ प्राप्त हुआ। इनको शिक्षा **थियोडोर जेनसन** ने दी जो एक ब्रिटिश चित्रकार थे। रेजिमेंट द्वारा कला प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाता था।जिसमे सन् 1873 ई., 1875 ई. में ब्रिटिश कला दीर्घाओं की प्रदर्शनी में राजा रवि वर्मा के चित्र भी प्रदर्शित हुए। परिवर्तन की एक चिंगारी का सुलगना था। सन् 1857 ई. में प्रथम क्रांति के विफल होने से अंग्रेजों की शक्ति बढ़ गई। भारत में अधिकांश भागों में ब्रिटिश शासन थोपा गया। इसी समय कला विकास में एक नया मोड़ आया। कला शिक्षा संस्थानों का उदय हुआ परंतु इन संस्थानों में यूरोपीय शिक्षकों की नियुक्ति हुई इनकी गतिविधियॉ लंदन की रॉयल एकेडमी ऑफ आर्ट्स के अनुरूप रखी गई। परन्तु आगे चलकर इन कला विद्यालयों में भारतीय शिक्षक व विद्यार्थी आए जिन्होंने कला शिक्षण कार्य किया।

सन् 1850 ई. में शल्य चिकित्सक **डॉ एलेक्जेंडर हंटर** द्वारा मद्रास स्कूल की स्थापना की गई। 1884 ई. में **ई.वी. हैवेल** को यहाँ का प्रधान शिक्षक नियुक्त किया गया। 1929 ई. में **देवी प्रसाद राय चौधरी** प्रथम भारतीय कला प्राचार्य नियुक्त हुए। इसके पश्चात क्रमशः गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट कोलकाता (1854) सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स, मुंबई 1857 ई., राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स, जयपुर 1857 ई., मेयो स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट, लाहौर 1875 ई. कला विद्यालयों की स्थापना हुई।ई. वी. हैवेल ने भारतीय आदर्श से पूर्ण अजंता, राजपूत एवं मुगल शैली को आधार मानकर कला अभीव्यक्ति करने की सलाह दी। **पर्सी ब्राउन** तथा **डॉ. आनंद कुमारस्वामी** ने भी भारतीय कला के आदर्श गुणों के प्रचार प्रसार में पूर्ण सहयोग दिया। **डॉ. मुल्कराज आनंद** का मत है कि हैवल ने ब्रिटिश कला पद्धति को हटाकर जो भारतीय पारंपरिक कथानकों एवं शैली के आधार पर कला शिक्षण आरंभ करवाए

इन कला विद्यालयों में केवल चित्रकला ही नहीं वरन् मूर्तिकला, स्थापत्य कला, छापा कला आदि का प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाने लगा।

आज इन विद्यालयों का स्वरूप परिवर्तित हो चुका है वहॉ नई कला विद्याओं का भी समावेश हुआ है और कला के मानक भी बदल गए हैं। जैसे इंस्टालेशन आर्ट, पॉटरी सिरेमिक, टेक्सटाइल डिजाइन, इंटीरियर डेकोरेशन, इवेंट मैनेजमेंट डिजाइन, लेदर क्राफ्ट, टॉय मेकिंग, म्यूजियोलॉजी आदि। इन सब के प्रेरणादायक महान चित्रकारों के सम्मुख एक और प्रश्न आ खड़ा हुआ। कला की शिक्षा तो दी जाने लगी परन्तु कला को एक व्यवसायिक रूप प्रदान किया जाए ताकि कलाकार अपना जीविकोपार्जन अपनी कुशलता द्वारा कर सके। कला पत्रिका संपादन व कला संगठनों द्वारा इस समस्या का समाधान खोजने का पूर्ण प्रयास किया गया जो कला दीर्घाओं के फलस्वरूप आज हमारे सम्मुख है। कला संगठनों का कार्य कार्यशाला, कला संगोष्ठी, सेमिनार आदि का आयोजन कर समाज के प्रत्येक वर्ग के मनो विचारों को जानना था कि किस प्रकार कला को एक मंच प्रदान किया जाए जो इन संगठनों का एक सफल प्रयास रहा सन् 1907 ई. में सर जॉन वुडरॉफ की सहायता से इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट की स्थापना की सन् 1919 ई. में **ओ.सी. गांगुली** के सम्पादन में कला पत्रिका **रूपम** का प्रकाशन हुआ इसमें 30 सदस्यों में से मात्र पांच भारतीय थे। कला प्रशिक्षण एवं संरक्षण का समस्त उत्तरदायित्व इस संस्था का था। कला का अस्तित्व समाप्त होने को था। उसके अध्ययन एवं मूल्यांकन का कार्य भी प्रारंभ हुआ जिससे भारतीय कला का संपूर्ण अस्तित्व वापस से स्पष्ट हो जाए। कला संस्थाओं द्वारा कलाकारों को विदेशी कला परंपरा को जानने का अवसर भी प्रदान किया जाता था तथा विदेशों में कला प्रदर्शनियों में अपनी कला प्रस्तुत करने का सुअवसर भी प्रदान किया जाता था।

सन् 1935 ईस्वी में **अमृता शेरगिल** ने भी भारत आकर कला प्रदर्शनी की तथा यहाँ के कलाकारों, कला विचार को को एक नई सोच प्रदान की। जिसमें कला दीर्घाओं का निर्माण व विकास दोनों ही बातों पर विशेष ध्यान आकृष्ट हुआ तथा इन अनुभूतियों के आधार पर अपनी संस्कृति के अनुसार शास्त्रीय नियमों के साथ कलाकार ने अपनी रुचि के अनुसार सृजन प्रारंभ कर दिया। अचानक ही कला के विभिन्न कलाकार संगठनों का एक हुजूम सा उमड़ आया जिसमें कलकत्ता ग्रुप 43, शिल्पी चक्र,, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप मुंबई आदि प्रमुख ग्रुप स्थापित हुए। कलाकारों को प्रदर्शन के लिए कला दीर्घाओं की आवश्यकता थी जिसे समाज ने स्वीकार किया व अनेक कला प्रेमियों द्वारा कला संभावनाओं को आगे बढ़ाया गया। इन कला संगठनों, संस्थाओं व दीर्घाओं का कार्य भारतीय कला से संबंधित प्राचीन व आधुनिक कलाकृतियों का संरक्षण, प्रोत्साहन एवं विकास करना था। आज कला दीर्घाओं का कार्य कला के आयामों को समाज से जोड़ना है। इसके अतिरिक्त इन कला दीर्घाओं में चित्र संसार की हर एक सूक्ष्म जानकारी के लिए अनेक पत्र पत्रिकाओं का भंडार है। जो युवाओं के लिये मार्गदर्शक का कार्य करती है। भारतीय कला बाजार में आए परिवर्तन का पूर्ण श्रेय कला दीर्घाओं को ही दिया जाता है।

## प्रमुख कला दीर्घाएं

**1–धूमीमल कला दीर्घा** – धूमीमल कला दीर्घा की स्थापना सन् 1936 ईस्वी में हुई। लगभग 70 वर्षों से भी अधिक समय से यह कला दीर्घा समकालीन कला को बढ़ावा दे रही है इस गैलरी की स्थापना **श्री राम बाबू जैन** द्वारा की गई। रामबाबू जैन एक कला प्रेमी तथा कला के सच्चे प्रशंसक थे वे प्रिंटिंग व प्रकाशन के व्यवसायी थे उनका कला प्रेम उन्हें कला के समकालीन प्रगतिशील चित्रकारों की ओर ले गया। यह वह समय था जब कनॉट प्लेस में धूमीमल कला दीर्घा की स्थापना हुई। इस कला दीर्घा के शुभारंभ पर **स्वर्गीय शैलोज मुखर्जी, यामिनी राय** जैसे कलाकारों द्वारा कला प्रदर्शन हुआ। शीघ्र ही यह स्थान एक कला केंद्र के रूप में विकसित हुआ तथा कलाकारों का मिलन केंद्र बनता चला गया, जहाँ कलाकारों के मध्य परिचर्चा होने लगी तथा यह केंद्र बिंदु के रूप में विकसित हुआ। कला दीर्घा कलाकार सम्मेलन, वाद–विवाद, कला विचारों के रूप में राजधानी की एकमात्र कला दीर्घा थीं जो संगीत सभा का आयोजन करवाती थी। **अब्दुलरहमान चुगताई, यामिनी रॉय, शैलोज मुखर्जी** और अन्य कलाकारों पर मोनोग्राफ भी पहली बार इसी कला दीर्घा में प्रस्तुत की गई। 40 के दशक में धूमीमल ने एक काला केंद्र बिंदु के रूप में संपूर्ण भारत में एक अलग प्रकार प्रयोगकर्ता के रूप में स्थान प्राप्त किया जो समय कोई नहीं कर पाया। यह नवोदित कलाकारों का प्रमुख केंद्र है। रामबाबू जैन के मृत्यु हो गई तथा गैलरी का दारोमदार उनके पुत्र **श्री रवि**

**जैन** के हाथों में आ गया, जो उसी समय अमेरिका से आए थे वह भारतीय चित्रकला से जुड़े थे। 70 के दशक में यह दीर्घा पूर्ण विकसित होकर प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी थी।

आज धूमीमल कला दीर्घा का कला संग्रह अन्य गैर–सरकारी कलादीर्घा से कई गुना बेहतर है।, **सूजा, स्वामीनाथन, गाड़े, विमल दास गुप्ता, यामिनी राय, अंजलि इला मेनन, कृष्णा खन्ना** अन्य कलाकारों का कार्य यहाँ संग्रहित है।आज ये दीर्घा उदय जैन व उनकी माता उमा जैन के आश्रय में चल रही है। जिंस ट्रस्ट का नाम रवि जैन मेमोरियल ट्रस्ट है। कला दीर्घा युवा कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए छात्रवृत्तियां भी प्रदान करती है। 2003 सितंबर को धूमीमल आर्ट कॉम्प्लेक्स का भी श्रीगणेश किया जा चुका है, जो देश का पहला आर्ट मेगा कॉम्प्लेक्स है।

**2–त्रिवेणी कला दीर्घा**–त्रिवेणी कला संगम की स्थापना सन् 1951 में मंडी हाउस दिल्ली के एक छोटे से कॉफी हाउस से हुई। लेकिन आज यह कला दीर्घा स्वयं के प्रयासों द्वारा प्रदर्शनियॉ आयोजित कर रही हैं। इस कला दीर्घा का स्थापत्य का नमूना वास्तुशिल्पी जोशेफ ओलेन स्टाइन द्वारा तैयार किया गया था। त्रिवेणी कला संगम में तीन कला दीर्घा हैं– त्रिवेणी कला दीर्घा, श्रीधरनी कला दीर्घा, आर्ट हेरिटेज कला दीर्घा।

यहॉ खुली हवा में ही एक नाटक गृह विद्वान है। साथ ही वातानुकूलित छोटा नाटक कक्ष, साउंड रिकॉर्डिंग कक्ष, पुस्तकालय, संगीत के रिकॉर्ड अथवा कैसेट्स, एक छायाचित्र प्रयोगशाला आदि व्यवस्थाएं उपलब्ध हैं।

श्रीधरनी कला दीर्घा कला प्रदर्शनिओं का मुख्य केंद्र है। यह किताबों व कॉफी के लिए प्रसिद्ध है। सबसे नीचे का स्थान पैतृक धरोहर व चित्रों के लिए जाना जाता है। सन् 1978 ई. में अलका जी व उनकी बेगम रोशन अलका जी द्वारा हेरिटेज कला दीर्घा त्रिवेणी दिल्ली में स्थापित की गई। इस कला दीर्घा का उद्देश्य कला का प्रचार प्रसार करना व कला कार्यों को बढ़ावा देना था। साथ ही कला को एक ऐसा दृष्टिकोण प्रदान करना था जिसमें कला जगत में विस्फोट उत्पन्न हो।

**3–जहाँगीर कला दीर्घा**– यह कला दीर्घा सन् 1952 ई. में **श्री कांवर जी जहाँगीर** द्वारा **के. के. हैब्बर व होमी भाभा** की सलाह पर बनाई गई। जो काला घोड़ा प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम के पीछे दक्षिण में गेटवे ऑफ इंडिया के पास मुंबई में स्थापित है। यह कला दीर्घा बॉम्बे आर्ट सोसायटी द्वारा संचालित की जाती थी। इसकी व्यय निधि का संपूर्ण वहन कावर जी जहांगीर द्वारा किया जाता था। यहां चार कला प्रदर्शनी हॉल स्थित है तथा इनकी इमारत को बनाने में जी. एम. बूटा एसोसिएशन का पूर्ण सहयोग मिला।

**4–नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट**–यह भारतीय कला दीर्घा में अग्रणी मानी जाती है। प्रमुख कला संग्रहालय की स्थापना सन 1954 ई. 29 मार्च को दिल्ली में हुई। इस कला दीर्घा कि उपशाखाएं बेंगलुरु, मुंबई में भी है। यहां लगभग 14000 कलाकृतियों का संग्रह है जिसमें **टॉमस डेनियल, राजा रवि वर्मा, अवनींद्र नाथ टैगोर, गगनेंद्रनाथ टैगोर, नंदलाल बोस, यामिनी राय, अमृता शेरगिल** अन्य भारतीय व विदेशी चित्रकारों द्वारा निर्मित चित्र व मूर्तियाँ भी संग्रहीत हैं।यह म्यूजियम राजपथ के अन्त में तथा इण्डिया गेट के सामने स्थित हैं।यह इमारत मुगल काल में जयपुर के महराजा का निवास स्थान था। वहीं से इसका नाम **'जयपुर हाउस'** पडा। 2009 ई. में आधुनिक कला संग्रहालय की नई शाखा का उद्घाटन किया गया। जिसमें नई कला दीर्घा नया ऑडिटोरियम,,, वाचनालय, कैफेटेरिया, एकेडमिक सेक्शन, म्यूजियम शॉप आदि उपलब्ध कराए गए।

**5– ललित कला अकादमी**– ललित कला अकादमी की स्थापना सन् 1954 ई. में भारत सरकार द्वारा की गई। भारत सरकार द्वारा संबन्धित ललित कला अकादमी भारत का श्रेष्ठ कला संस्थान है जो भारतीय ललित कला व संस्कृति को प्रोत्साहन प्रदान करती है। यह अकादमी सांस्कृतिक मंत्रालय द्वारा संचालित वा स्थापित है यह कला दीर्घा स्कॉलरशिप, स्पॉन्सरशिप, फैलोशिप, इंस्टिट्यूशन स्कॉलरशिप अन्य सुविधाएं प्रदान करती है। यह त्रिनाले के समान अन्य विधाओं में भी कला प्रदर्शनी आयोजित कराती है। भारतीय कला को समझते हुए भारतीय व विदेशी कलाकारों को प्रोत्साहन के लिए प्रदर्शनियाँ की जाती है। इस कला दीर्घा का मुख्यालय रविंद्र भवन नई दिल्ली है तथा रीजनल सेंटर भुवनेश्वर, चेन्नई, गढ़ी, दिल्ली, कोलकाता, लखनऊ, शिमला है। इसके चेयरमैन **प्रेसिडेंट कवि अशोक वाजपेई जी** है।

**6–बढ़ेरा कला दीर्घा**– इस कला दीर्घा की स्थापना सन् 1987 ई. में ओखला (नई दिल्ली) में हुई। भारतीय कलाकृतियों, प्राचीन कलाकृतियों का संरक्षण, कला की पुस्तकों का प्रकाशन इस कला दीर्घा का प्रमुख कार्य है जो लगभग 24 वर्षो से प्रगतिशील है। इस कला दीर्घा का मुख्य उद्देश्य यह है कि दीर्घा द्वारा उन कलाकृतियों को जनता तक ले जाया जाय जो प्राचीन के साथ आधुनिक कला को प्रदर्शित कर रही है। 2006 ई. में बढ़ेरा कला के सहयोग द्वारा फाउण्डेशन फार इण्डियन कन्टेम्परेरी आर्ट ने कला शिक्षा, कला कर्म को लाभ प्रदान करने की दृष्टि से चित्रकारों, आलोचकों, संग्रहालयों, निर्देशकों और अन्य व्यवसायिक कला से संबंधित विषय व विचारों को एक स्तंभ के रूप में सहयोग प्रदान किया।

## संदर्भ ग्रंथ सूची–


- समकालीन भारतीय कला– डॉक्टर ममता चतुर्वेदी
- अधिक भारतीय चित्रकला– डॉक्टर गिर्राज किशोर अग्रवाल
- आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तंभ– डॉ. प्रेमचंद्र गोस्वामी
- Contemporary Art in India A Perspective- Dr. P. N. Mago

**Sites-**

1. www.dhoomomalartcenter.com
2. www.lalitkala.gov.in
3. www.wikipedia.org
4. www.vaderaart.com